

“गण” - एवम् - “कारक”

गण :- संस्कृत में धातुओं को दस गणों में विभक्त किया गया है। ये दस गण निम्नलिखित हैं :-

- | | | | |
|----|----------------|--------|--------------------------------|
| 1. | भ्वादिगण - | “भू” | आदि धातुओं का वर्णन जिसमें है। |
| 2. | अदादिगण - | “अद्” | आदि धातुओं का वर्णन जिसमें है। |
| 3. | जुहोत्यादिगण - | “हु” | आदि धातुओं का वर्णन जिसमें है। |
| 4. | दिवादिगण - | “दिव्” | आदि धातुओं का वर्णन जिसमें है। |
| 5. | स्वादिगण - | “सु” | आदि धातुओं का वर्णन जिसमें है। |
| 6. | तुदादिगण - | “तुद्” | आदि धातुओं का वर्णन जिसमें है। |
| 7. | रूधादिगण - | “रुध्” | आदि धातुओं का वर्णन जिसमें है। |
| 8. | तनादिगण - | “तन्” | आदि धातुओं का वर्णन जिसमें है। |
| 9. | क्रयादिगण - | “क्री” | आदि धातुओं का वर्णन जिसमें है। |
| 10 | चुरादिगण - | “चुर्” | आदि धातुओं का वर्णन जिसमें है। |

लकार :- संस्कृत में कुल मिलाकर दस लकार है। ये दस निम्नलिखित हैं :-

1. लट् लकार - “वर्तमान” काल में प्रयुक्त होता है।
2. लिट् लकार - “परोक्षभूत” काल में प्रयुक्त होता है।
3. लुट् लकार - “अनद्यतन” भूतकाल में प्रयुक्त होता है।
4. लृट् लकार - “अनद्यतन” भविष्यत काल में प्रयुक्त होता है।
5. लोट् लकार - आज्ञार्थक वाक्यों में प्रयुक्त होता है।
6. लङ् लकार - अनद्यतन भूतकाल में प्रयुक्त होता है।
7. विधिलङ् लकार - “विध्यर्थकः” वाक्यों में प्रयुक्त होता है।
8. आशीर्लिङ् लकार - “आशीः” वाक्यों में प्रयुक्त होता है।
9. लृङ् लकार - “क्रियातिपत्ति” काल में प्रयुक्त होता है।
- 10 लृङ् लकार - “क्रियातिपत्ति” काल में प्रयुक्त होता है।

पुरुष :- संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं :-

1. प्रथम पुरुष
2. मध्यम पुरुष
3. उत्तम पुरुष

1. प्रथम पुरुष :- इसको “अन्य पुरुष” भी कहते हैं। वह तथा संज्ञा शब्दों अर्थात् शिमला, सोलन, राम, श्याम आदि के लिए इसका प्रयोग होता है।

वह पढ़ता है = सः पठति। “ति” प्रत्यय।

वे दो पढ़ते हैं = तौ पठतः। “तः” प्रत्यय।

वे सब पढ़ते हैं = ते पठन्ति। “अन्ति” प्रत्यय।

2. मध्यम पुरुष :- “युष्मद्” शब्दों के लिए इसका प्रयोग होता है। “तू” इसका प्रयोग क्षेत्र है जैसे “तू” पढ़ता है = त्वं पठसि “सि” प्रत्यय।

तुम दो पढ़ते हो = युवाम् पठथः “थः” प्रत्यय।

तुम सब पढ़ते हो = यूयम् पठथ। “थ” प्रत्यय।

3. उत्तम पुरुष :- “अस्मद्” शब्द के लिए इसका प्रयोग होता है। “मैं” इसका प्रयोग क्षेत्र है। जैसे:-
मैं पढ़ता हूँ = अहं पठामि - आ “मि” प्रत्यय।

हम दो पढ़ते हैं = आवाम् पठावः - आ “वः” प्रत्यय।

हम सब पढ़ते हैं = वयम् पठामः - आ “मः” प्रत्यय।

धातु भेद :- प्रत्येक गण की धातुओं को “तीन” पदों में विभक्त किया जाता है। जैसे :-

1. परस्मैपदी, 2. आत्मनेपदी, 3. उभयपदी। “परस्मैपदी” और “आत्मनेपदी” धातुओं के अलग-अलग 9-9 प्रत्यय हैं जैसे :-

परस्मैपदी

एकव०

द्विव०

बहुव०

आत्मनेपदी

एकव०

द्विव०

बहुव०

कु०पु०	तिप् (ति)	तस् (तः)	झि (अन्ति)	त (ते)	आताम् (एते)	झ (अन्ते)
म०पु०	सिप् (सि)	थस् (थः)	थ	थास् (शे)	आथाम् (एथे)	ध्वम् (ध्वे)
उ०पु०	मिप् (आमि)	वस् (आवः)	मस् (आमः)	इड् (ए)	बहडि (वहे)	महिड् (महे)

नोट :- “कोष्ठक” के प्रत्ययों में विशेष लकारों में परिवर्तन भी हो जाता है।

धातु-वाच्य :- धातुओं के तीन वाच्य होते हैं :- 1. कर्तृवाच्य। 2. कर्मवाच्य। 3. भाववाच्य।

1. कर्तृवाच्य :- कर्त्ता में प्रथमा, “कर्म” में द्वितीया विभक्ति आती है, तथा क्रिया का वचन एवं पुरुष कर्त्ता के अनुसार होता है। जैसे :-

रामः पुस्तकं पठति = राम पुस्तक पढ़ता है।

2. कर्मवाच्य :- कर्त्ता में तृतीया “कर्म” में प्रथमा विभक्ति आती है, तथा क्रिया का वचन एवं पुरुष “कर्म” के अनुसार सदैव आत्मनेपद में होता है। जैसे :-

रामेण पुस्तकं पठ्यते = राम के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।

3. भाववाच्य :- कर्त्ता में तृतीया तथा क्रिया सदैव प्रथम पुरुष के एकवचन आत्मनेपद, में ही प्रयुक्त होती है। जैसे :-

शिशुना रुद्यते = बच्चे से रोया जाता है।

धातुओं के “कर्मवाच्य” एवम् “भाववाच्य” रूप :-

धातु	रूप	अर्थ	धातु	रूप	अर्थ
गम्	गम्यते	जाया जाता है।	पच्	पच्यते	पकाया जाता है।
पठ्	पठ्यते	पढ़ा जाता है।	दृश्	दृश्यते	देखा जाता है।
खाद्	खाद्यते	खाया जाता है।	भ्रम्	भ्राम्यते	घूमा जाता है।
त्यज्	त्यज्यते	छोड़ा जाता है।	पूज्	पूज्यते	पूजा जाता है।
सेव्	सेव्यते	सेवा की जाती है।	लभ्	लभ्यते	पाया जाता है।
नी	नीयते	ले जाया जाता है।	रुद्	रुद्यते	रोया जाता है।
हन्	हन्यते	मारा जाता है।	नृत्	नृत्यते	नाचा जाता है।
स्था	स्थीयते	ठहरा जाता है।	स्वप्	सुप्यते	सोया जाता है।
पा	पीयते	पीया जाता है।	मृ	मृत्यते	मरा जाता है।
वच्	उच्यते	बोला जाता है।	वस्	उष्यते	रहा जाता है।
गी	गीयते	गाया जाता है।	जृ	जीयते	बूढ़ा हुआ जाता है।
दा	दीयते	दिया जाता है।	लुप्	लुप्यते	छिपा जाता है।